Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 9) SEPTEMBER 2025

OPEN ACCESS WORLD RABIES DAY - 28th SEPTEMBER POPULAR ARTICLE

रेबीज: कारण, लक्षण व निवारण

डॉ प्रवीण पिलानिया*, डॉ भूपेन्द्र कस्वां [1]

*सहायक आचार्य कृषि महाविद्यालय, कोटपुतली एवं

[1] सहायक आचार्य डेयरी विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी महाविद्यालय, जोबनेर

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

***Corresponding Author:** praveenpilaniya1990@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17328191

Received: September 29, 2025

Published: September 30, 2025

© All rights are reserved by **प्रवीण पिलानिया**

रेबीज एक जूनोटिक बीमारी है जो कुत्तों, चमगादड़, लोमड़ी आदि संक्रमित जानवरों के काटने पर उनकी लार से इंसानों में फैलती है। रेबीज एक ही वायरस के कारण होने वाली एक जानलेवा बीमारी है, जो जानवरों (मुख्य रूप से कुत्तों) और इंसानों दोनों में सेंट्रल नर्वस सिस्टम पर हमला करती है। जानवरों में इसके लक्षणों में व्यवहार में बदलाव, बेचैनी, आक्रामकता (फ्यूरियस रेबीज) या लकवा (डंब रेबीज) शामिल हैं, जो अंततः सेंट्रल नर्वस सिस्टम को नुकसान पहुंचाते हैं। इंसानों में, यह आमतौर पर संक्रमित जानवर के काटने या खरोंच से फैलता है, और अगर तुरंत वैक्सीन न लगवाई जाए तो यह घातक होता है। आमतौर पर आवारा कुत्ते या वे कुत्ते जिनमें टीकाकरण नहीं हुआ होता हैं, उनकी लार में यह वायरस रहता है, जोकि काटने से व्यक्ति में प्रवेश कर जाता है। इसके बारे में जागरूक करने के लिए रेबीज नियंत्रण सप्ताह मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य है लोगों को रेबीज के प्रति जागरूक करना, और यह सुनिश्चित करना कि हर जानवर को समय पर टीका मिले, ताकि इंसानों को भी इस घातक रोग से बचाया जा सके। रेबीज के कई चरण होते हैं, रेबीज का सबसे पहला चरण इंक्यूबेशन पीरियड होता है। इस स्टेज में इंफैक्शन की शुरुआत होती है, लेकिन लक्षण दिखने शुरू नहीं होते। इसका समय 10 दिन से कुछ सालों तक हो सकता है। अगर इस स्टेज में इलाज हो जाए तो रेबीज से जान बचाई जा सकती है।

रेबीज जानवरों में कैसे फैलता है और लक्षण क्या हैं ?

- **प्रसार:** रेबीज वायरस सबसे ज्यादा संक्रमित जानवर की लार में होता है, जो काटने या खरोंचने के माध्यम से फैलता है, यह खून या मल से नहीं फैलता है।
- **रेबीज की वाहक प्रजातिया :** कुत्ते, बिल्ली, चमगादड़, लोमड़ी, रैकून, और कई अन्य स्तनधारी रेबीज के वाहक हो सकते हैं।
- **रेबीज होने पर क्या होता है**: रेबीज वायरस शरीर में तब प्रवेश करता है जब किसी संक्रमित जानवर की लार खुले घाव (आमतौर पर काटने से) में मिल जाती है। यह केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में नसों के साथ बहुत धीरे-धीरे चलता है। जब यह मस्तिष्क तक पहुंचता है, तो क्षति न्यूरोलॉजिकल समस्याओं का कारण बनती है। वहां से रेबीज वायरस संक्रमित व्यक्ति को कोमा और मौत की ओर ले जाता है।

लक्षण:

- **शुरुआती अवस्था:** जानवर बेचैन हो सकते हैं, थकान महसूस कर सकते हैं, और काटने या खुजली के लक्षण दिख सकते हैं, कुछ सामाजिक व्यवहार दिखाते हैं, जबकि अन्य खुद को अलग कर लेते हैं।

- **उत्तेजित अवस्था (फ्यूरियस रेबीज):** जानवर बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति अति-प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं और चीजों को काटने की प्रवृत्ति रखते हैं।
- **लकवा अवस्था (डंब रेबीज):** इसमें शरीर में समन्वय की कमी होती है, जिससे मुंह से लार टपकती है और निगलने में कठिनाई होती है, जिससे लार मुंह से बाहर बहता रहता है।

रेबीज इंसानों में कैसे फैलता है और लक्षण क्या हैं ?

- **मनुष्यों में रेबीज के क्या लक्षण दिखाई देते हैं:** जब किसी मनुष्य के शरीर में रेबीज वायरस प्रवेश करता है तो उसके बाद कई हफ्तों तक आमतौर पर रेबीज के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। जब रेबीज मनुष्य के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में पहुंच जाता है, तो वह फ्लू जैसे लक्षणों का अनुभव करते हैं। अंतिम चरण में, व्यक्ति को न्यूरोलॉजिकल लक्षण दिखाई देते हैं।
- **प्रसार:** 99% से अधिक मानवीय मामलों में यह कुत्ते के काटने और खरोंच से होता है।
- **लक्षण:** यह एक तंत्रिका तंत्र पर हमला करने वाला वायरल रोग है, और एक बार लक्षण दिखने के बाद यह लगभग हमेशा घातक होता है।
- **जोखिम:** रेबीज से संक्रमित जानवर के लार के संपर्क में आने से, या संक्रमित जानवर के लार का किसी खुले घाव या म्यूकोसल मेम्ब्रेन (जैसे आंखें, मुंह) के संपर्क में आने से फैल सकता है, लेकिन यह सामान्य त्वचा से नहीं फैलता है।

रेबीज होने के क्या कारण हैं ?

मनुष्यों में रेबीज का प्राथमिक कारण रेबीज वायरस है, जो लिसावायरस जीनस से संबंधित है। वायरस आमतौर पर संक्रमित जानवरों की लार के माध्यम से फैलता है, आमतौर पर काटने के माध्यम से। रेबीज के संचरण के कुछ सामान्य कारण और तरीके यहां दिए गए हैं :-

1. **जानवरों का काटना :-** मनुष्यों में रेबीज संचरण का सबसे आम तरीका संक्रमित जानवर के काटने से होता है, विशेष रूप से कुत्ते, बिल्ली, चमगादड़, रैकून, लोमड़ी आदि स्तनधारियों के काटने से। रेबीज वायरस संक्रमित जानवरों की लार में मौजूद होता है और त्वचा को काटने से फैल सकता है।
2. **खरोंचें और चाटना :-** जबकि काटना संचरण का सबसे आम मार्ग है, रेबीज संक्रमित जानवरों की खरोंच या चाटने के माध्यम से भी फैल सकता है यदि लार कटी हुई त्वचा या श्लेष्म झिल्ली के संपर्क में आती है।
3. **एरोसोलिज्ड वायरस का अंत:श्वसन :-** दुर्लभ मामलों में, रेबीज़ को चमगादड़ों की गुफाओं या प्रयोगशाला सेटिंग्स में एरोसोलिज्ड रेबीज़ वायरस के साँस लेने के माध्यम से प्रेषित किया जा सकता है जहां वायरस उच्च सांद्रता में मौजूद होता है।
4. **लार या तंत्रिका ऊतक के संपर्क में :-** किसी संक्रमित जानवर की लार या तंत्रिका ऊतक के सीधे संपर्क में आने से, जैसे कि प्रयोगशाला सेटिंग में या शिकार और जानवरों को काटने के दौरान, भी रेबीज संचरण का कारण बन सकता है।
5. **प्रसवकालीन संचरण :-** बहुत ही दुर्लभ मामलों में, गर्भावस्था या प्रसव के दौरान संक्रमित मां से उसके अजन्मे बच्चे में रेबीज का संचरण हो सकता है।

किस जानवर से रेबीज हो सकता है ?

कोई भी स्तनधारी जानवर (वो जानवर जो अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं) रेबीज वायरस फैला सकता है। रेबीज़ एक वायरल बीमारी है जो मनुष्यों सहित सभी स्तनधारियों को प्रभावित कर सकती है। जबकि कोई भी स्तनपायी संभावित रूप से रेबीज वायरस से संक्रमित हो सकता है, कुछ जानवर आमतौर पर वायरस को ले जाने और प्रसारित करने से जुड़े होते हैं।

रेबीज के जोखिम कारक:

कई कारक रेबीज के जोखिम और संचरण के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। निवारक उपाय करने और यदि आवश्यक हो तो उचित चिकित्सा देखभाल प्राप्त करने के लिए इन जोखिम कारकों को समझना आवश्यक है। रेबीज के सामान्य जोखिम कारक निम्न हैं :-

1. **संक्रमित जानवरों के संपर्क में :-** रेबीज के लिए प्राथमिक जोखिम कारक रेबीज वायरस से संक्रमित जानवरों के संपर्क में आना है। इसमें काटने, खरोंचने या संक्रमित जानवरों की लार के संपर्क में आना शामिल है।
2. **भौगोलिक स्थिति :-** रेबीज़ का ख़तरा भौगोलिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। कुछ क्षेत्रों में, चमगादड़, रैकून और लोमड़ी जैसे कुछ

Citation: प्रवीण पिलानिया व भूपेन्द्र कस्वां. (2025). रेबीज: कारण, लक्षण व निवारण. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 9, pp. 52–54). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.17328191

जानवर वायरस के सामान्य वाहक हैं, जिससे जोखिम का खतरा बढ़ जाता है।

3. **व्यावसायिक जोखिम :-** जो व्यक्ति जानवरों के साथ काम करते हैं, जैसे पशुचिकित्सक, पशु नियंत्रण अधिकारी, वन्यजीव शोधकर्ता और प्रयोगशाला कर्मचारी, संभावित रूप से संक्रमित जानवरों के साथ निकट संपर्क के कारण रेबीज के जोखिम में वृद्धि हो सकती है।
4. **बाहरी गतिविधियाँ :-** जो लोग बाहर बहुत समय बिताते हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां रेबीज अधिक फैलता है, उन्हें पागल जानवरों से सामना होने का खतरा अधिक हो सकता है।
5. **पालतू जानवर और पशुधन :-** बिना टीकाकरण वाले पालतू जानवर, जैसे कि कुत्ते और बिल्लियाँ, वन्यजीवों से रेबीज का अनुबंध कर सकते हैं और संभावित रूप से मनुष्यों में वायरस फैला सकते हैं। किसी पागल जानवर के काटने पर पशुधन को भी खतरा हो सकता है।
6. **स्थानिक क्षेत्रों की यात्रा :-** उन क्षेत्रों की यात्रा करना जहां रेबीज अधिक आम है, पागल जानवरों के संपर्क में आने का खतरा बढ़ जाता है। इन क्षेत्रों की यात्रा करते समय जोखिम कारकों से अवगत रहना और सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है।
7. **चमगादड़ों के संपर्क में :-** चमगादड़ कई क्षेत्रों में रेबीज़ वायरस के महत्वपूर्ण वाहक हैं। चमगादड़ द्वारा काटे जाने या खरोंचे जाने या यहां तक कि चमगादड़ के सीधे संपर्क में आने से भी रेबीज फैलने का खतरा हो सकता है।
8. **चिकित्सा देखभाल मांगने में देरी :-** रेबीज के संभावित जोखिम के बाद चिकित्सा देखभाल लेने में देरी से बीमारी विकसित होने का खतरा बढ़ सकता है। रेबीज के लक्षणों की शुरुआत को रोकने के लिए पोस्ट-एक्सपोज़र प्रोफिलैक्सिस (पीईपी) तुरंत शुरू किया जाना चाहिए।
9. **वन्य जीवन की संभाल :-** वन्यजीवों, विशेष रूप से असामान्य व्यवहार करने वाले या बीमार दिखने वाले जानवरों को संभालने से रेबीज के संपर्क में आने का खतरा बढ़ जाता है। वायरस के संभावित संचरण को रोकने के लिए जंगली जानवरों के सीधे संपर्क से बचना महत्वपूर्ण है।
10. **टीकाकरण का अभाव :-** पालतू जानवरों, विशेष रूप से कुत्तों और बिल्लियों को रेबीज के खिलाफ टीका लगाने में विफलता से जानवरों की आबादी के भीतर संचरण और मनुष्यों के संपर्क में आने का खतरा बढ़ जाता है।

रेबीज का निदान कैसे किया जाता है ?

अधिकांश बीमारियों के विपरीत, रेबीज के निदान के लिए लक्षणों की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि आपको किसी जंगली जानवर या किसी पालतू जानवर ने काट लिया है या खरोंच दिया है, जिसे रेबीज हो सकता है, तो तुरंत अपने डॉक्टर से इस बारे में बताना चाहिए और उचित उपचार करवाना चाहिए। डॉक्टर आपके घाव या खरोंच की जाँच करेंगे और आपसे जानवर के बारे में पूछेंगे। यदि आपको किसी पालतू जानवर ने काटा है तो डॉक्टर आपसे उसके निर्धारित टीकाकरण की जानकारी साझा करने के लिए कह सकते हैं। मिली जानकारी के अनुसार डॉक्टर जांच करवाने के लिए भी कह सकते हैं ।

बचाव के उपाय:

- **जानवरों का टीकाकरण:** अपने पालतू जानवरों का टीकाकरण सुनिश्चित करें और आवारा कुत्तों के टीकाकरण को बढ़ावा दें।
- **स्वच्छता और तत्काल उपचार:** अगर कोई जानवर काटता है या खरोंचता है, तो तुरंत साबुन और पानी से घाव धोएं और तुरंत डॉक्टर से मिलें।
- **जागरूकता:** रेबीज के खतरों और बचाव के तरीकों के बारे में जागरूक रहें।

कुल मिलाकर, सबसे अच्छी रोकथाम की रणनीति में यह सुनिश्चित करना शामिल है कि पालतू जानवरों का टीकाकरण किया जाए, जंगली जानवरों के संपर्क से बचा जाए, और रेबीज वाले जानवर द्वारा काटे जाने या खरोंचने पर तुरंत चिकित्सा सहायता ली जाए।

Citation: प्रवीण पिलानिया व भूपेन्द्र कस्वां. (2025). रेबीज: कारण, लक्षण व निवारण. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 9, pp. 52–54). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.17328191